महाप्रयाणम्

(हिन्द्यांग्लभाषानुवादोपेतं संस्कृतकाव्यम्)

प्रणेता
कविरत्नश्रीकृष्णसेमवालः

1985

देववाणी-परिषद्, दिल्ली

आर ६ वाणी-विहारः, नयी दिल्ली - ११००५६

महाप्रयाणम्

(श्रद्धाञ्जलिकाव्यम्)

(हिन्द्याङ्गलभाषानुवादसहितम्)

प्रणेता :
कविरत्नम् श्रीकृष्णसेमवालः

१९८५

प्रकाशिका
देववाणी-परिषद्, दिल्ली
६, वाणी-विहारः, नयी दिल्ली-११००५९
(भारतम्)

महाप्रयाणम् (श्रद्धाञ्जलिकाव्यम्)

प्रणेता : कविरत्न श्रीकृष्णसेमवालः

प्रकाशिका : देववाणी-परिषद्, दिल्ली
६, वाणी-विहारः, नयी दिल्ली-११००५९

मुद्रकः : प्रवीण प्रिंटिंग सर्विस
३५, टी एक्स०, उत्तम नगर,
नई दिल्ली-११००५९

संस्करणम् : प्रथमम्, १९८५

मूल्यम् : विंशति रूप्यकाणि रु० २०.००

MAHĀPRAYĀṆAM
(Tribute-Poetry)

Author : Semwal, Kaviratna Shrikrishna

Publisher : Devavani Parishad, Delhi
6, Vani-Vihar, New Delhi-110059

Printed at : Parveen Printing Service
35, T Extn., Uttam Nagar,
New Delhi-110059

Edition : First, 1985

Price : Rs. Twenty only Rs. 20,00

महाप्रयाणम्

MAHĀPRAYĀṆAM

संसारस्थितिनाशपालनरतं विश्वेश्वरं पावनम्,
हर्षाक्रोशवियोगशोकनिलयं ध्यात्वा प्रभुं सादरम् ।
पूज्यां तां प्रियदर्शिनीं च जननीं नत्वा प्रियामिन्दिरां,
श्रद्धाया कुसमाञ्जलिः सुमनसा तस्यै मया दीयते ॥१॥

वाणी वाक्यविहीनतामुपगता पाणिः क्रियाशून्यताम्,
बुद्धिश्चञ्चलतां गता जननि हे पादौ स्थिरौ संगतौ ।
नेत्रे वै तमसावृते प्रतिगते मातर्हतायां त्वयि,
हा हा सर्वविधैव सम्प्रति गता निश्चेतना मे गतिः ॥२॥

संसार की उत्पत्ति, नाश एवं विकास में तत्पर विश्व के स्वामी पवित्र, हर्ष, आक्रोश, वियोग एवं शोक के स्थान, सभी प्राणियों के आश्रयभूत एवं शान्तिदाता उस परब्रह्म परमात्मा का ध्यान करते हुए पूजनीय मातृरूप प्रियदर्शिनी श्रीमती इन्दिरा गाँधी को मैं श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता हूँ ।१।

हे माँ ! तेरी मृत्यु की सूचना प्राप्त होने पर मेरी वाणी में गूँगापन, हाथों में शून्यता, बुद्धि में चञ्चलता और पैरों में स्थिरता आ गयी तथा आँखों में अन्धेरा छा गया, इस प्रकार मेरी समस्त क्रियाविधि निश्चेतन हो गयी ।

1. Devoutly meditating on that pure Supreme Absolute, eagerly engaged in the creation. sustenance and dissolution of the Universe; the repository of delight, protestful shout, sadness and separation; the place of repose of all living beings and the bestower of eternal peace, I offer my humble and respectful tribute to the venerable Mother Shrimati INDIRA GANDHI PRIYADARSHINI.

2. O Mother, on hearing the dreadful news of thy death, my power of speech turned dumb, my hands became weary and languid, my brain perturbed, my feet benumbed and my eyes enveloped in darkness. Thus all my activities came to a standstill.

लोके ते विमलं यशोऽनवरतं प्रोद्भासतां दीप्यताम्,
इत्थं चेतसि चिन्तयञ्जननि हे धृत्वा धृतिं तत्क्षणम् ।
श्रद्धायास्सुमनोऽञ्जलिं सुमनसा भक्त्या।र्पयन् सत्कविः,
काव्ये भावनिबन्ध लिखति सः श्रद्धाञ्जल्लि सादरम् ॥३॥

आकाशे परिलक्ष्यते मलिनता नम्रा दिशोऽपि ध्रुवम्,
म्लानत्वं भुवि पादपादिषु तथा वायोर्महावक्रता ।
रम्या हा धरिणी विवर्णवदना सन्दृश्यते साम्प्रतम्,
हा हा ब्रूहि किमद्य चात्र भवति ह्येतन्महानर्थकम् ॥४॥

हे माँ ! संसार में तेरा स्वच्छ यश निरन्तर देदीप्यमान होता रहे इस भावना को हृदय में विचार कर इस गहरे दुःख में शीघ्र ही धैर्य को धारण करके श्रद्धारूपी पुष्पाञ्जलि को पवित्र मन से भक्ति-पूर्वक अर्पित करता हुआ मैं काव्य में अपनी श्रद्धामयी भावनाओं को बाँध कर श्रद्धाञ्जलि रूप में इस काव्य को सादर लिख रहा हूँ ।३।

आज आकाश में मलिनता, दिशाओं में नम्रता, पेड़-पौधों में मुर्झायापन, वायु में वक्रता और पृथ्वी में खिन्नता दिखायी दे रही है। अरे ! बताओ आज संसार में ऐसा कौन सा अनर्थ हो गया है जिससे सारी प्रकृति प्रतिकूल दिखायी पड़ती है ।४।

3. Mother dear, may thy spotless fame spread ever and anon illuminating the entire world. This thought appeared in my mind presently whereupon I consoled myself and wrote these verses with a pure and devoted heart to be humbly dedicated to thee as my loyal tribute.

4. A sullying dimness has enveloped the atmosphere; the quarters have stooped down; the trees and creepers appear faded and lustreless; the wind seems to blow crookedly; the entire earth appears sad and forlorn. O tell me what calamity has befallen the world. The very Nature has adopted a singularly unfavourable attitude.

इत्थं चिन्तयता तदैव कविना संरुद्धकण्ठेन हा !
दुःखेनातिविवर्णभावमनसा चाकाशवाण्या तया ।
मन्दामन्दतया श्रुतं निगदितं कैश्चिद्विमूढैर्जनैः,
हत्या भारतगौरवस्य विहिता मान्येन्दिराया भुवि ॥५॥

वृत्तं निशम्य तदिदं समभूत्सदानीं,
नेत्रान्धता भुवि जनस्य मनःसु पीडा ।
वक्षः प्रताड्य मनुजो विललाप भूयः,
हा हा हता सुजननी मम सेन्दिराद्य ॥६॥

ऐसे सोचते हुए कवि ने उसी समय अवरुद्ध कण्ठ से अत्यन्त दुःख एवं खिन्न भाव से धीमी-धीमी एवं त्वरित ध्वनि में आकाश-वाणी कही हुई आवाज सुनी कि "किन्हीं मूढ़ लोगों ने भारत की गौरवभूत प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी की हत्या कर दी है" ।५।

इस समाचार को सुनकर समस्त लोगों की आँखो में अन्धेरा छा गया तथा मन को गहरा सदमा पहुँचा और वे 'आज मेरी माँ इन्दिरा मर गयी हैं' ऐसा कहते हुए छाती पीट-पीट कर रोये ।६।

5. The Poet was brooding thus over the chaotic appearance of Nature when from the All India Radio an announcement was broadcast in choking words of sorrowful import :—The Hon'ble Prime Minister Shrimati Indira Gandhi has been shot dead by certain evilminded persons today.

6. On hearing this announcement everyone was stunned and overwhelmed. All became blind with tears welling up in their eyes and the minds extremely distressed. They screamed aloud beating their bosoms and falteringly uttering the words "Our Mother Indira is dead !"

निश्चेतनाः भुवि लुठन्ति जनाश्च केचित्,
केचित्क्वचित् व्यथितमानसमानवाश्च ।
विक्षिप्ततामुपगता व्यपहाय धैर्यम्,
वृत्तं निशम्य मरणस्य तवाद्य मातः ॥७॥

यस्याः प्रभाभरितभारतवर्षमेतत्,
लोके विकासपथमत्यधिकं प्रयातम् ।
सा मातृभूहितरता जगदम्बिकाद्य,
क्रूरैर्हतात्र विहितं ननु निन्द्यकर्म ॥८॥

हे माँ इन्दिरे ! तुम्हारी मृत्यु के अप्रिय समाचार को सुनकर कुछ लोग अचेतन होकर जमीन पर लुढ़क गये और कहीं कोई अत्यंत दुःखी होकर समस्त धैर्य को त्याग कर पागल से हो गये ।७।

जिस श्रीमती इन्दिरा गाँधी की प्रतिभा से परिपूर्ण होता हुआ भारतवर्ष अत्यन्त उन्नति को प्राप्त हुआ उस मातृभूमि की सेवा में संलग्न, समस्त संसार की मातृरूपा श्रीमती इन्दिरा गाँधी की आज क्रूर पापियों ने हत्या कर अत्यन्त निन्द्य कार्य किया ।८।

7. Mother Indira, the stunning news of thy death has struck down everyone senseless. They are rolling down on the ground in the excess of their grief maddening them to a frightful extent forsaking their fortitude.

8. Verily a base and foul deed was perpetrated by these ruthless ones by killing Indira Gandhi the Mother Figure of the entire Earth, who was engaged in the welfare of her Motherland and whose brilliant glory enabled the land of Bharata to blossom into a highly developed state of progress and prestige.

या भारतस्य महते हितचिन्तनाय,
दत्तावधानहृदया नितरां प्रवृत्ता ।
अत्यन्तपूत हृदयां किल सेन्दिराद्य,
हा हा विमूढमतिभिर्निहिता कृतघ्नैः ॥९॥

प्रातः प्रयाणमतुलं जनताहिताय,
गेहात्कृतं सपदि हृष्टहृदा ययाद्य ।
मार्गे दुरात्मचरितैः जननी हता सा,
हा भारतं विनिहतं निहतं धरायाम् ॥१०॥

जो इन्दिरा गाँधी भारतवर्ष की भलाई के लिए एकमत होकर हमेशा तल्लीन रहती थी, उस पवित्र हृदय श्रीमती इन्दिरा गाँधी की मूढमति लोगों ने आज हत्या कर दी ।९।

जिस श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने अत्यन्त प्रसन्नचित्त से आज लोकहित के लिए प्रातःकाल ही घर से अतुलनीय प्रस्थान किया था, अत्यन्त कष्ट है कि मार्ग में ही दुष्ट चरित्र वालों ने श्रीमती इन्दिरा गाँधी की हत्या करके मानो सम्पूर्ण विश्व में भारत की हत्या कर दी हो ।१०।

9. Ungrateful wretches of vicious heart have struck down dead, our beloved Indira Gandhi of spotlessly pure heart who had always been engaged in singleminded attention towards the all round prosperiety of our Motherland Bharata Varsha.

10. With great eagerness and assiduity she left the house early in the morning in her round of engagements to bring about the welfare of the common people. But Lo ! the spiteful iniquity of the base ones caused her death-nay, the death of the Motherland itself !!

यस्या उदारचरितं हृदयं विलोक्य,
दुष्टा भ्रमन्ति भवने सततं हि तस्याः।
विश्वासभूहृदयधारिणि मातृरूपे,
तैरेव तत्र निहता त्वमयीन्दिरे हा!! ११॥

"मातः" सदा भणति योऽत्र विनम्रभावैः,
प्रातः सदा नमति यो विनयप्रदर्शी।
मूढाविमौ, विनिहता किल सा च ताभ्याम्,
तत्सद्मनि त्वरितमेव किमन्यकष्टम् ॥१२॥

जिस श्रीमती इन्दिरा गाँधी के उदार हृदय को देखकर के दुष्ट जन तेरे भवन में ही निरन्तर घूमते रहते थे, अत्यन्त विश्वास को हृदय में धारण करने वाली मातृरूपा हे इन्दिरा गाँधी ! अत्यन्त कष्ट है कि उन्होंने तुम्हें तुम्हारे ही घर में मार दिया।११।

जो निरन्तर तुम्हारे घर में तुम्हें माँ कह कर पुकारता था और जो प्रातःकाल तुम्हें प्रणाम करता था, इन्हीं दोनों मूर्खों ने तुम्हारे ही घर में तुम्हारी हत्या की है, इससे अतिरिक्त कष्ट क्या हो सकता है।१२।

11. Taking advantage of your largehearted benevolence these iniquitous wretches frequented your abode. It is indeed a pity that they struck you dead despite the fact that you were treating them like a loving mother.

12. One of the killers hovered round you always calling you 'Mother'. Another one used to pay respects to you every morning with feigned veneration. What can be more shameful than this betrayal of trust and confidence by these fools who murdered you in your own house !!

भव्याकृतिः परमपावनपावनी सा,
सौम्याकृतिः जनमनस्सुविनोदिनी सा।
भूमौ यदा निपतिता मृदुलेन्दिरा सा,
किं नो विकम्पितवती धरिणी प्रभूता !! १३॥

हा हा परार्थहितचिन्तनदत्तचित्ता,
ध्यानस्थिता धृतिमती हृदि बद्धभावा।
एकात्मवृत्तिनिरता जननीन्दिरा सा,
पाषाणखण्डहृदयैर्निहता तदैव ॥१४॥

उत्कृष्ट आकृति, अत्यन्त पवित्र, सरल स्वभाव, प्राणिमात्र के मनों को आनन्दित करने वाली, कोमल देहधारिणी वह इन्दिरा गाँधी जब पृथ्वी में गिरी होगी तब क्या पृथ्वी कम्पायमान नहीं हुई होगी ? अर्थात् अवश्य पृथ्वी कम्पायमान हुई होगी।१२।

दूसरों की भलाई की चिन्ता में दत्तचित्त, ध्यानस्थित धैर्य-शालिनी, हृदय में शुद्ध विचारों को बाँधने वाली एकाग्रचित्त से कार्यनिरत उस आदरणीया इन्दिरा गाँधी को, अत्यन्त दुःख है कि, उसी समय पत्थर के टुकड़ों की तरह दिल वालों ने खत्म कर दिया।१४।

13. The very Earth would have trembled with excessive shock when you the personification of all noble qualities that endeared yourself even to the layman fell on the ground.

14. I have no doubt that the heart of those murderers was harder than a piece of rock, for they have killed you who always thought of the welfare of others whose fortitude was without any parallel and who was like a mother unto all.

हे हे विनिन्द्यचरितौ ननु नो प्रयाता,
लज्जा दयापि मनसोः युवयोस्तदानीम् ।
हा हा यदा विनिहता जननीन्दिरा सा,
क्रूरैः करैश्च सुखदा भुवनस्य शोभा ॥१५॥

हे हे विमूढहृदयौ ! युवयोः कुकृत्यैः,
विश्वासभूर्व्यपगता भुवनादिदानीम् ।
सम्पूर्णविश्वमधुना युवयोश्चरित्रम्,
हा निन्दति प्रतिपथं कटुवाक्यजालैः ॥१६॥

हे निन्दनीय चरित वालो ! क्या उस समय तुम दोनों के मन में लज्जा और दया भी नहीं आयी, जब तुमने संसार की शोभा सम्पूर्ण प्राणियों को सुख देने वाली श्रीमती इन्दिरा गाँधी को क्रूर हाथों से मार डाला ।१५।

हे भटके मन वालो ! तुम्हारे कुत्सित कार्य के द्वारा आज संसार से विश्वास ही उठ गया है, सारा संसार आज तुम्हारे दुश्चरित्र की प्रत्येक राह पर कठोर वचनों के द्वारा निन्दा कर रहा है ।१६।

15. O wicked murderes ! did your hearts not have the feelings of pity and shame when you raised your hands wielding the murderous weapons to kill our mother, dear Indira Gandhi who shed lustre everywhere and who made all the people of the world happy and prosperous.

16. O Silly murderes ! the entire world condemns you with adverse remarks for the very names of trust, faith, confidence and loyalty have vanished from the world on account of your betrayal and offensively rank behaviour.

हे हे भुशुण्डि ! गलिता प्रथमं कथन्न,
हे गोलिकाः ! किमिति नो पतिता हि भूमौ ।
हे हे दुरात्मचरितौ च तथान्यमूर्खाः,
यूयं कथन्न विरताः निजनिन्द्यकृत्यात् ॥१७॥

हे हे निकृष्टचरिताः प्रियभूकलंकाः,
भूमौ स्थिता अपि सदा बहुभारभूताः ।
युष्मत्कुकृत्यमवलोक्य समस्तलोके,
हा लज्जते सपदि मानवमात्रमत्र ॥१८॥

हे वन्दूक ! तुम इन्दिरा गाँधी पर प्रहार करने से ही गल क्यों नहीं गयी और हे गोलियो ! तुम श्रीमती इन्दिरा गाँधी के शरीर पर लगने से पहले जमीन पर क्यों नहीं गिर गयीं ? हे निन्दनीय चरित्र वालो तथा इसी प्रकार के अन्य सहयोगी मूर्खो ! तुम लोग अपने निन्द्य कृत्य से क्यों नहीं विरत हो गये ? ।१७।

अरे ! निन्दनीय आचरण वाले एवं प्यारी भारत माँ के लिए कलंकरूप ! पृथिवी के भार रूप ! तुम्हारे इस कुत्सित कार्य को देखकर संसार का प्राणिमात्र लज्जित हो रहा है ।१८।

17. O stengun ! why did you not break into pieces before the attack on her ? O Bullets ! why did you not fall on the ground before hitting her ? O the two killers and others of that ilk ! why did you not stop from your bad deed ?

18. O wicked ones of base activities. you are a stigma on our beloved land. You were a burden unto this mother earth. There is no one in the world of living beings who does not feel ashamed for your foul deed.

धर्मान्धवृत्तनिरतैः यमदूतकल्पैः,
क्रूरैः करालहृदयैः कलिकल्मषाख्यैः ।
सर्वत्र धर्मसमभावनिविष्टभावा,
सा चेन्दिरा विनिहता समधर्मचेताः ॥१९॥

युष्मादृशामत्र विनिन्द्यकार्यै-
रन्योन्यविद्वेषविशेषतो हा ।
पीडापरा या घटनास्तु जाता-
स्ताः भ्रातृभावाय कलंकरूपाः ॥२०॥

धर्म में अन्धे हो आचरण करने वाले यमदूत रूप क्रूर-कराल हृदय, और कलियुग के कलंक रूप मूर्खों ने सर्वत्र समान धर्म का आचरण करने वाली अत्यन्त उदारचेता उस इन्दिरा गाँधी को मार डाला ।१९।

आप सरीखे लोगों के निन्दनीय कार्यों के द्वारा आपसी विद्वेष से जो दर्दभरी घटनाएँ घटी वे सभी भाईचारे के लिए कलंक रूप हुई ।२०।

19. The highly liberal hearted Indira Gandhi whose mind, words and actions were based on noble ideals of religious tolerance has unfortunately been done to death by these ruthless and hard hearted murderers guilty of blind bigotry who are not inferior to the messengers of YAMA the god of Death.

20. The painful incidents, occured due to your condemnable deeds, are a stigma on the fraternal understanding.

परस्परं स्नेहविशेषतस्समाः
शमं प्रयान्ति प्रथमं समस्याः ।
कदाप्यहो दारुणदुःखदायी
न घट्यतेऽयं घटनाक्रमोऽत्र ॥२१॥

परं विधातुस्तु विधानमेतत्
विचित्रमेव प्रतिभाति लोके ।
अहो करोत्येष समस्तकार्यं
जनस्तु तत्प्रेरणयैव नित्यम् ॥२२॥

आपस में स्नेहपूर्वक ये सभी समस्याएं पहले ही शान्त हो जाती तो यह अत्यन्त दुःख देने वाला घटना क्रम कभी नहीं घटता ।२१।

किन्तु इस संसार में विधाता का विधान विचित्र ही दिखाई देता है। संसार का प्राणी उससे ही प्रेरित होकर समस्त कार्य करता है ।२२।

21. Had all these problems been solved in an atmosphere of goodwill, this series of painful events would have never come up.

22. But, the writ of destiny seems to be quite strange and the worldly beings act according to it.

छिन्नद्रुमा इव यदा जननीन्दिरा सा,
भूमौ शुभा निपतिता मृदुलस्वभावा ।
जातं तदा धरणि ते बहुकष्टमद्य,
नो वर्णनस्य करणे कविरत्र शक्तः ॥२३॥

निपतिता यदा श्रीमतीन्दिरा, सपदि ते प्रिये क्रोडसीमनि ।
अयि धरे कथन्त्वं विदीर्णतां, न हि गता तदा मातृरूपिणी ॥२४॥

परमहो यदा विश्वमण्डले, न हि समाश्रयं यच्छति प्रजा ।
अयि धरे तदा स्वाङ्कसीमनि त्वमपि यच्छसि स्नेहसौहृदम् ॥२५॥

कटे हुए वृक्षों के समान जब वह इन्दिरा गाँधी लोक कल्याण-कारिणी, कोमलस्वभाली मातृरूपा भूमि में गिरी होगी, तब हे पृथ्वी तुम्हें जो कष्ट हुआ होगा उसका वर्णन करने में कवि समर्थ नहीं है ।२३।

हे धरे! आदरणीया श्रीमती इन्दिरा गाँधी जब तुम्हारी गोद में धड़ाम से गिरी होगी, तब क्या हे मातृरूपिणी पृथ्वी तुम्हारा दिल विदीर्ण नहीं हुआ होगा ? अर्थात् अवश्य हुआ होगा ।२४।

परन्तु आश्चर्य है कि संसार में जब कोई भी प्राणी आश्रय नहीं देता है अर्थात् प्राणी मृत्यु को प्राप्त हो कर निराश्रित हो जाता है तब हे पृथ्वी ! तुम ही एक ऐसी हो जो अपनी निर्मल गोद में उसे स्नेह और सौहार्द प्रदान करती हो ।२५।

23. The poet is not competent to describe the pain and anguish of the very ground where the tender hearted Mother Figure Indira Gandhi fell down like a tree cut at the very root.

24. O Mother Earth ! how is it possible that your heart is not rent to pieces when the esteemed Indira Gandhi fell into your lap all of a sudden ?

25. In the wide world when a living organism does not find shelter and succoure elsewhere it is you who lovingly and gladly bestow on it the pleasure of rest in your cosy lap.

यदि धरातले मातृरूपिणीं, परमपावनीमिन्दिरामिमाम् ।
न हि सुरक्षितुं सक्षमो जनो वद न कस्त्वदन्या समाश्रयेत् ॥२६॥

धरणि वेद्मि ते तां व्यथाकथां, कुटिलपापिनो धर्मचारिणः ।
भुवनभाविनः पुण्यधारिणः, त्वमयि यच्छसि स्वाङ्कनिर्मलम् ॥२७॥

धरणि धार्यते किं त्वया नहि, कुटिलसन्ततिः पापकारिणी ।
परमहो त्वया किं विधीयते, ननु समाश्रयी त्वं हि वर्तसे ॥२८॥

यदि संसार में मातृरूपिणी परमपावनी श्रीमती इन्दिरा गाँधी को भी व्यक्ति सुरक्षा देने में समर्थ नहीं है तो तुमही बताओ उन्हें तुम्हारे अलावा कौन आश्रय दे सकता है अर्थात् कोई नहीं ।२६।

हे पृथ्वी ! मैं तुम्हारी उस व्यथाकथा को जानता हूँ कि तुम्हें कुटिल, पापी, धर्मचारी, लोक कल्याणकारी, पुण्यधारी सभी प्राणियों को अपनी गोद में आश्रय देना पड़ता है ।२७।

हे पृथ्वी ! क्या तेरे द्वारा कुटिल सन्तान को आश्रय नहीं दिया जायेगा अर्थात् अवश्य दिया जायेगा, क्योंकि तुम भी क्या कर सकती हो कि तुम सब प्राणियों को आश्रय देने वाली हो इसलिए इन्हें भी तुम्हें आश्रय देना पड़ेगा ।२८।

26. No one else can accord peaceful and permanent rest to our beloved mother-like Indira. Only you are capable of it.

27. O Earth, I understand your unpleasant predicament of being compelled to offer asylum unto all and sundry, good and bad, the righteous and the iniquitous in your benevolent lap.

28. What else can you do but offer a place of rest for these sinful sons too Verily you are the succour unto all,

परमहो जगन्मृत्युना यया,
सपदि कम्पितं तत्क्षणं हि यत् ।
प्रकटयत्यमुं श्रीमतीन्दिरा-,
गुणगणान्वितं गौरवं महत् ॥२९॥

अयि महोज्ज्वले ते मृतौ द्रुतम्,
विविधतामयी चित्रतापरा ।
भरतभूरियं शोकविह्वला,
सपदि संगतानाथतां भुवि ॥३०॥

किन्तु जिस श्रीमती इन्दिरा गाँधी की मृत्यु से शीघ्र ही समस्त संसार कम्पित हो उठा इस प्रकार संसार का कम्पित होना ही तेरे महान् गुणगौरव को स्वतः प्रकट कर रहा है ।२९।

हे अत्यन्त उज्ज्वल चरित्रशालिनी श्रीमती इन्दिरा गाँधी ! तेरी हत्या होने पर विविधतामयी और चित्र विचित्र रूपधारिणी यह भारतभूमि शोक से विह्वल हो करके आज संसार में अनाथ हो गयी है ।३०।

29. The very fact that the entire world trembles and quivers, indicates your lofty stature for, at the death of Indira it is inevitable.

30. O hightly lustrous Mother Indira, the land of Bharata with the diversity of its cultural tradition and varieties of customs and manners has become helpless and forlorn due to thy premature death.

निधनतापरं वृत्तमप्रियं,
श्रवणयोर्यदा संगतं तव ।
हृदयतन्त्रिका शून्यतां गता,
निखिलदेहिनां मर्मदेवेदिनाम् ॥३१॥

भरतभूमहामात्य इन्दिरा,
दुरभिमानिभिर्नाशिताधुना ।
श्रुतमिदञ्च यैर्जायते च तद्,
हृदि विषादकोपादिकं सकृत् ॥३२॥

हे मातृरूपा इन्दिरा गाँधी तुम्हारे मृत्युपरक अप्रिय समाचार के कानों तक पँहुचते ही मर्मवेदी समस्त प्राणियों की हृदयतन्त्री शून्यता को प्राप्त हो गयी ।३१।

भारतवर्ष की प्रधानमन्त्री की आज किन्हीं दुष्टों ने हत्या कर दी, जिन्होंने यह समाचार सुना, उनके हृदय में विषाद, क्रोध, घृणा आदि एक साथ उत्पन्न हुए ।३२।

31. On hearing the unpleasant news of thy death, O Mother Indira, the very vitals of the entire living beings over the earth ceased to function.

32. Indira the Prime Minister of India has been killed by the vicious ones. Whoever heard this news was overwhelmed by distress and anger at the very instant.

विश्वेशासनदक्षतामुपगता या शासने शासिका
सम्पूर्णा भरतावनिः भुवितले संरक्षिता पोषिता।
तस्यास्तन्निलये कृतां कलुषितां संश्रुत्य हत्याकथाम्,
सम्प्राप्तं भयमद्भुतं जनहृदि श्रुत्वा दशां कष्टदाम् ॥३३॥

यस्याः शासनमागतं विकसितं भव्यं प्रियं भारतम्,
सर्वोत्थानपरम्परां प्रतिगतं सर्वप्रकारेण यत्।
तस्यास्तन्निलये निशम्य निधनं सर्वात्मना कष्टदम्,
संजातो मम मानसे ह्यतितरां खेदो हि मर्मान्तकः ॥३४॥

जो इन्दिरा गाँधी समस्त विश्व में अपने कुशल शासन के द्वारा लोकप्रियता को प्राप्त हो गयी थी जिसने सम्पूर्ण भारतवर्ष को बड़े प्यार और निष्ठा से पाला और पोसा उसके ही घर में किये गये हत्या के कलुषित वृत्तान्त को सुन कर समस्त संसार भयावह स्थिति को प्राप्त हो गया।३३।

जिस श्रीमती इन्दिरा गाँधी के शासनकाल में भारतवर्ष सभी प्रकार से फला, फूला विकसित हुआ, उस इन्दिरा गाँधी का उसके ही घर में सभी प्रकार से कष्ट प्रदान करने वाला निधन का समाचार सुन कर मेरे मन में अत्यन्त मर्मान्तिक दुःख हुआ।३४।

33. She had been popular all over the world on account of her ability to administer her country which she protected and developed. On hearing the news of her murder at her very residence the dismay and fright in the hearts of the common people was much.

34. Our beloved country India attained full development and rapid progress in every respect during her rule. Her murder at her very residence was indeed horrible and it made me extremely sad.

यद् जात्यर्थमतीव लाभमधुना देव्या यया वै कृतम्,
तस्या एव सुतैरतीव विमला माता जगन्मोहिनी।
सा छद्माभिहता सदा हितकरी सद्धर्मरक्षारता,
हा हा चेतसि जायते बहुघृणा श्रुत्वा कुकृत्यञ्च तत् ॥३५॥
देशोत्थानमतिः प्रिया हितकरी श्रद्धास्पदा भाविनी,
सर्वैश्वर्यकरी सदा सुखकरी पुण्यप्रदा शोभना।
श्रीभिस्संवलितेन्दिरा विनिहता दुष्टैश्च या साम्प्रतम्,
तेनैवात्र मनोऽति दुःखितमिदं क्रोधाग्निना दह्यते ॥३६॥

जिस समाज के लिए इन्दिरा जी ने अत्यन्त लाभ पहुँचाया उसी समाज के पुत्रों ने अत्यन्त विमल, संसार को प्रभावित करने वाली एवं निरन्तर परोपकार में लगी हुई सद्धर्म की रक्षा में दत्तचित्त उस इन्दिरा गाँधी को कपट से मारा। इसप्रकार के कुकृत्य के वृत्तान्त को सुनकर मानवमात्र के मन में घृणा उत्पन्न हो गयी।३५।

देश के उत्थान के लिए प्रवृत्त बुद्धि वाली, प्रिय एवं हितकारी श्रद्धास्पद आनन्ददायिनी, सभी ऐश्वर्यों को प्रदान करने वाली और सुख देने वाली, पुण्य को प्रदान करने वाली, ऐश्वर्य से सम्पन्न श्रीमती इन्दिरा गाँधी को आज दुष्टों ने मार डाला है. इसोकारण मन आज अत्यन्त दुःखित होता हुआ क्रोध की अग्नि से जल रहा है।३६।

35. The mind of all human beings in the world is filled with contempt for the wicked ones for whose bolk she had done much in her magnanimous effort to accord security and all round development.

36. Her mind was always engaged in finding out ways and means for the uplift of the Motherland. She did everything to please the general public. She was large hearted and liberal minded. She was richly endowed with all good qualities. To hear that she has been killed by the wicked persons causes unhappiness all round and makes the heart burn wiih the fire of anger.

भुवनमण्डलमण्डनमण्डने,
जननि ते निधनस्य कथाश्रुतौ ।
वसुमती सकला ननु दृश्यते,
सघनदुःखपरा तमसावृता ॥३७॥

नयनवारिझरैः परिपूरिता,
हृदयशोकभरा व्यथितास्तथा ।
युवतयो युवका विलपन्ति हा,
पुनरहो पुनरेव पुनः पुनः ॥३८॥

समस्त संसार की शोभा रूप हे माँ इन्दिरा गाँधी ! तुम्हारे निधन के समाचार को सुन कर सम्पूर्ण पृथ्वी अपने को अत्यन्त दुःखी एवं अन्धकार से घिरी हुई अनुभव कर रही है ।३७।

आँखों में आँसुओं की धारा, हृदय में शोक का सागर और अत्यन्त दुःखी समस्त युवक एवं युवतियाँ बार-बार विलाप करने लगे ।३८।

37. O Mother Indira, you had been illuminating and embellishing the entire world and the news of your death makes all of them feel enveloped in darkness. They are excessively miserable.

38. The eyes are filled with torrents of tears, the heart with grief. Everywhere young men and women lament again and again.

भुवनकार्यविधेर्न हि वर्तते,
किमपि बोधपरञ्च तथाप्यहो ।
सरलभावयुता भुवि बालकाः,
तव वियोगपरा विलपन्ति हा ॥३९॥

पलितकेशपरा सकला नराः,
निखिलनार्य इमाः व्यथितास्समाः ।
अहह ताः विलपन्ति मुहुर्मुहुः,
विमलवक्षप्रताडनतत्पराः ॥४०॥

संसार की क्रियाविधि का जिनको लेशमात्र भी ज्ञान नहीं है तब भी सरल स्वभाव वाले संसार के बालक तुम्हारे विरह में विलाप करते हैं ।३९।

अत्यन्त वृद्ध एवं समस्त विश्व की नारियाँ अपनी छाती को पीट-पीट कर तुम्हारे निधन पर बार-बार विलाप कर रही हैं ।४०।

39. The innocent children too of the entire world weep and cry though they have no knowledge of the intricasies of the workings of the worldly affairs.

40. The grey haired men and women too are distressed. They weep again and again beating their chests.

भुवनमण्डलमानवं एव हि,
जननि ते निधनेन विलोक्यते ।
भयपरो व्यथितोऽपि च दुःखितो,
बहुविधस्त्रसितोऽपि च दृश्यते ॥४१॥

दिशस्समस्ताः प्रदिशस्समस्ता,
नभोऽपि भूमिश्च जगत्समस्तम् ।
श्रुत्वेन्दिराया निधनस्य वृत्तम्,
वियोगभूमिं प्रति संगतं हा ॥४२॥

हे माँ ! समस्त संसार का मानव मात्र तुम्हारे निधन से अत्यन्त दुःखित और भयपीड़ित एवं व्यथित और त्रस्त भी दिखायी दे रहा है ।४१।

समस्त दिशाएँ एवं प्रदिशाएँ आकाश और पृथ्वी तथा समस्त संसार श्रीमती इन्दिरा गाँधी के आकस्मिक निधन को सुन कर अत्यन्त वियोग को प्राप्त हो गये ।४२।

41. O Mother, men of the entire world are miserable at your death. They are filled with fear and terror at the turn of events.

42. All the quarters, the entire sky, the earth, nay the whole of the universe groan in their separation from you, O Indira.

विलपन्ति दिशः प्रदिशश्च तथा
गगनं विलपत्यतितारररवैः ।
विलपत्यतिकष्टहृदा भुवनं,
निधनेन तवासमये जननि ॥४३॥

विलपन्ति खगाः पशवोऽपि नगाः,
विलपन्ति च कीटपतङ्गदलाः ।
तरवो विलपन्ति वियोगभराः,
निधनेन तवासमये जननि ॥४४॥

हे माँ ! तुम्हारे असमय निधन के कारण दिशाएँ विलाप करने लग गयी, सारा आकाश ऊँचे स्वर में विलाप करने लग गया। इतना ही नहीं, समस्त भूमिमण्डल अत्यन्त कष्ट से विलाप करने लग गया ।४३।

हे माँ ! तुम्हारे आकस्मिक निधन से दुःखी होती हुई दिशाएँ, प्रदिशाएँ, पशु, पक्षी, कीट, पतङ्ग, पेड़, पौधे आदि समस्त संसार वियोग से दुःखी होता हुआ विलाप कर रहा है ।४४।

43. On your untimely death, O Mother, all the quarters and the entire firmament lament loudly. The pain they feel is excessive.

44. The birds, animals and even hills and mountains lament. The germs and insects too lament. The trees lament in their separation at your untimely death, O Mother.

अयि ते मरणं विलोक्य हे, पवनश्चापि विरामागतः ।
विभया प्रभयापि चन्द्रमाः, प्रतियातो भुवि मन्दतां द्रुतम् ॥४५॥

भुवने तपनस्य तापनं, शिथिलत्वं तु तदा गतं ध्रुवम् ।
जननी जनवल्लभा यदा, प्रतियाता तु दिवं प्रतीन्दिरा ॥४६॥

अयि काल दयामयीं शुभां, कुशलां शासनशासिकामिमाम् ।
जननीं भरतावनेः प्रियां, हरतः किन्नु दयागता न वा ॥४७॥

हे माँ तेरी मृत्यु को देख कर के हवा भी रुक गयी और चन्द्रमा अपनी विभा एवं प्रभा से मन्दता को प्राप्त हो गया ।४५।

संसार में सूर्य का तेज भी तुम्हारी मृत्यु देखकर शिथिल हो गया, क्योकि समस्त संसार की लोकप्रिय माँ आज स्वर्ग सिधार गयी ।४६।

हे मृत्यु ! दयामयी, कल्याणकारिणी, कुशलशासिका, भारतभूमि की प्यारी माँ श्रीमती इन्दिरा गाँधी को हरते हुए क्या तुमको दया नहीं आयी ।४७।

45. On perceiving your death, O Mother, the wind has come to a stand still. Bereft of its lustre and glitter the moon has become dull to the core.

46. When Mother Indira, the beloved of the layman wended her way to the heaven the blazing sun lost its capacity to scorch.

47. O Deity of Death, did not the duality of mercy befall you when you forcibly dragged the beloved mother of Bharata Varsha, the efficient administrator full of the milk of kindness ?

निजजन्मभुवः कृते यया, सकलं जीवनमर्पितं प्रियम् ।
हरतः किल चेन्दिराञ्च तां, मरण ! ब्रूहि दयागता न वा ॥४८॥

असहायधरामिमां प्रियां, परिहाय क्व गतासि सम्प्रति ?
भुवनभ्रमनाशकारिणि सपदि ब्रूहि दयामयीन्दिरे ॥४९॥

अयि यत्सुनिमेषमात्रतो भयभीताः प्रभवन्ति शासकाः ।
अनिमेषमिमं विलोक्य ते, हृदयं मे परिपीड्यतेऽधुना ॥५०॥

जिस माँ इन्दिरा ने अपनी मातृभूमि के लिए अपना समस्त जीवन आद्योपान्त अर्पित कर लिया उस इन्दिरा को हरते हुए हे मौत ! बताओ क्या तुम्हें दया आयी या नहीं ।४८।

हे दयामयी इन्दिरा ! इस प्यारी पृथ्वी को असहाय छोड़ कर तुम कहाँ चली गयी हो ? हे संसार के भ्रम को नाश करने वाली इन्दिरे ! शीघ्र हमें बताओ ।४९।

अयि इन्दिरा गान्धी ! जिस तुम्हारे निमेष मात्र से ही सारे संसार के शासक भयभीत होते थे, ऐसी तुम्हें आज अनिमेष देखकर मेरा हृदय अत्यन्त पीडा को प्राप्त हो रहा है ।५०।

48. O Death tell me; has mercy befallen you or not as you dragged that Indira who had dedicated her entire life for the sake of her motherland ?

49. O Benevolent Indira, the destroyer of confusion in the minds of the entire world, tell me quickly where you have gone leaving your beloved land of birth helpless.

50. The administrators of all the nations of the world were awe struck at the mere wink of your eyes. Now, seeing you winkless yourself, my heart grieves.

प्रथमं तु समाश्रयस्त्वया, सकलेभ्यस्तु सदैव दीयते ।
परमद्य निराश्रया सती, पतिता सा भुवि कीदृशीन्दिरा ।।५१।।

कथमत्र विधे त्वयि द्रुतं, जननीं तां प्रति वक्रता गता ।
यदियं जनसौख्यदायिनी, सहसा चैव हृता मनस्विनी ।।५२।।

प्रकृतेर्नियमोऽत्र वर्त्तते, भुवि यो जन्म दधाति मानवः ।
स हि याति विलीनतामपि, नियमः स्वीकृत एष किन्त्वया ।।५३।।

पहले जिस इन्दिरा गान्धी के द्वारा संसार के प्राणिमात्र को पवित्र आश्रय दिया जाता था, वही आज तुम आश्रयविहीन हो करके पृथ्वी में किस तरह गिरी हो ।५१।

हे विधाता ! तुम श्रीमती इन्दिरा गाँधी के प्रति शीघ्र ही इस तरह कैसे वक्र हो गये हो जो तुमने समस्त प्राणियों को सुख प्रदान करने वाली मनस्विनी श्रीमती इन्दिरा गाँधी को सहसा ही हर लिया है ।५२।

इस संसार में प्रकृति का नियम है कि जो मनुष्य संसार में जन्म लेता है वह अवश्य ही विलीनता को प्राप्त होता है हे इन्दिरे ! क्या तुमने इसी नियम को स्वीकार किया है ।५३।

51. Formerly, O Indira succour was extended by you to all and sundry; but how is it that you yourself have become bereft of succour ?

52. This noble minded Mother, she who accorded happiness unto the common man, is looked askance at by you, O Fate !

53. There is a Law of Nature that the man who is born gets dissolved too. Has that Law been adopted by you ?

मनसा वचसापि कर्मणा, मनुजैर्विश्वनिवासिभिस्समैः ।
सुमनोञ्जलिभिः प्रपूज्यते, चरणस्ते सततं हि श्रद्धया ॥५४॥

अयि भारतमानवर्द्धिनि, सरले हा प्रियदर्शिनीन्दिरे ।
निधनस्य दशां विलोक्य ते, महदाक्रोश इहैव जायते ॥५५॥

अयि भारतभूस्थले स्थले, महदाक्रोशपरा समागता ।
जनताहृदयेषु तत्क्षणं, विपुला क्रान्तिविनाशकारिणी ॥५६॥

मन से, वाणी से एवं कर्म से संसार के समस्त प्राणी अत्यन्त श्रद्धा से तुम्हारे चरणों में सुमनाञ्जलि अर्पण करते हैं ।५४।

भारत के सम्मान को बढ़ाने वाली सरल, निश्छल हे श्रीमती इन्दिरा गाँधी ! तुम्हारी मृत्यु की स्थिति को देखकर सभी लोगों के हृदय में अत्यन्त आक्रोश उत्पन्न हुआ और हत्यारों के प्रति प्रतिशोध की भावना उत्पन्न हो गयी ।५५।

इस जघन्य कृत्य के कारण भारत के प्रत्येक भूभाग में अत्यन्त आक्रोश से भरी हुई अत्यन्त विनाशकारिणी क्रान्ति जनता के हृदय में उत्पन्न हो गयी ।५६।

54. Floral tribute is paid at thy feet faithfully by all the people of the vast world mentally, verbally and physically.

55. O Priyadarshini Indira, thanks to you the honour and prestige of India has gone up. On seeing you dead a feeling of revengeful hatred against the murderers attended with revulsion has enveloped the people's heart.

56. On account of this repulsive act every corner of India is infested with a rebellious spirit that does not hesitate to strike down at opposition.

जननी निधनेन दुःखितः, सुतं एष दयावशं गतः।
अयि तेन नियन्त्रितस्तदा, नरसंहारभयावहो द्रुतम् ॥५७॥

क्रोधाग्निं भुवनस्य भावभरितं सम्यक्प्रकारेण यः,
सद्बुद्ध्या शमयन्ननीव विकलाञ्चैतामशान्तिं तथा।
लोके स्वात्मधृतिं विपत्तिसमये योऽदर्शयत्सम्प्रति,
भूयादेष स एव सौख्यनिलयो राजीवगान्धी सदा ॥५८॥

माता की मृत्यु से अत्यन्त दुःखी राजीव गाँधी इस नरसंहार रूपी क्रान्ति को देखकर अतिशय द्रवीभूत हो गया और उसने शीघ्र ही इस नरसंहार रूपी भयावह स्थिति पर अविलम्ब नियन्त्रण पा लिया।४७।

श्रीमती इन्दिरा गाँधी के प्रति श्रद्धामयी भावनाओं के कारण जनता में उठी हुई क्रोधाग्नि को और विकराल अशान्ति को लोकहित में अपनी सद्बुद्धि के द्वारा जिस राजीव गाँधी ने शान्त करते हुए संसार में विपत्ति के समय अतिशय धैर्य को प्रदर्शित किया वही राजीव गाँधी संसार के समस्त प्राणिमात्र के लिए सुख-सम्पत्ति का आश्रय-स्थान बने।५८।

57. Though griefstricken due to the death of his mother her beloved son Rajiv melted with pity at this rebellious holocaust and stopped it from further escalation.

58. The frightful disturbance to peace that had its origin in the spontaneous anger of the loyal people was curbed by Rajiv Gandhi who exhibited great fortitude at the time of great danger full of grief. May he be the source of comfort and consolation to all living beings.

मातस्त्वदीयचरणाम्बुजभक्तिभावाः,
स्नेहाश्रुपूरितपराः प्रियभारतीयाः ।
स्वप्नेऽपि विस्मृतिपथं न कदापि लोके,
नेष्यन्ति चारुचरितं तव पावनं तत् ॥५९॥

संघर्षपूरितमिमं तव जीवनं हे,
मातस्सदा दिशतु लोकहिताय शिक्षाम् ।
त्वद्दर्शितं जननि पूज्यपथप्रयाणं,
श्रद्धाञ्जलिश्चरणयोः स हि तेऽत्र मान्यः ॥६०॥

हे माँ ! तुम्हारे कमलरूपी चरणों के प्रति भक्तिभाव से परिपूर्ण स्नेहाश्रु से द्रवीभूत समस्त भारतीय तुम्हारे सुन्दर एवं पवित्र चरित्र को स्वप्न में भी नहीं भूलेंगे ।५९।

संघर्ष से परिपूर्ण लोकहितकारी तुम्हारा जीवन संसार में लोककल्याण की शिक्षा प्रदान करता रहे और तुम्हारे द्वारा लोकहित के लिए प्रदर्शित पूजनीय मार्ग पर चलना ही तुम्हारे चरणों में सच्ची श्रद्धाञ्जलि होगी ।६०।

59. O Mother Dear, all the Indians are dedicated in their heart of hearts to the loyalty to you and what you stand for. They will never forget your lifelong endeavour for everything good.

60. Let this life of thine, full of struggle, impart a valuable lesson to all the people. Traversing the path pointed by thee shall alone be the most fitting tribute unto thee.

किं किं त्वया नहि कृतं जननीन्दिरे हे,
हा भारतस्य यशसे महते हिताय ।
तस्माद्धि भारतमिदं मनसा स्मरन्ते,
श्रद्धाञ्जलिं चरणयोः वितनोति भक्त्या ॥६१॥

देशाय वै वीरगतिं गतायाः, रक्तस्य यस्याः पतिताः कणाः ये ।
ते ते भविष्यन्ति सदैकतायाः, प्रतीकरूपाः जगतीतलेऽस्मिन् ॥६२॥

युगो विलीनस्तु सह त्वयैव, हे मातृरूपे जगदम्ब भव्ये ।
विश्वेतिहासे तव शासनस्य, ह्यद्यावधि किन्न मनोरमोऽयम् ॥६३॥

हे माँ ! तुमने भारत की भलाई के लिए क्या-क्या नहीं किया ? उन्हीं सत्कार्यों को मन से स्मरण करता हुआ सारा भारतवर्ष आपके चरणों में श्रद्धाञ्जलि अर्पण कर रहा है ।६१।

उस श्रीमती गाँधी के देश के लिए वीरगति को प्राप्त होते हुए उसके शरीर से जितनी भी खून की बूँद इस धरती पर गिरी होंगी वे सभी इस संसार में हमेशा राष्ट्रीय एकता की प्रतीक होंगी ।६२।

हे मातृरूप कल्याणकारिणी श्रीमती इन्दिरा गाँधी ! विश्व के इतिहास में आज तुम्हारे शासन का सुन्दर युग तुम्हारे साथ ही विलीन हो गया ।६३।

61. What all things have been done by you to raise living standard in India ! They are thankfully remembered by the Indians and their tribute to you.

62. The drops of blood shed by her when she attained the goal of the heroes will symbolise the unity and integrity of the Nation.

63. An era has come to an end alongwith you, O Mother of divine qualities ; in the History of the world the era of your administration shall ever be an inspiring period.

अखण्डतायै भुवि भारतस्य, त्वदीयमेतद् बलिदानमत्र।
स्वर्णाक्षिरैस्ते रजतस्य पट्टे, लेखिष्यतीति प्रियनाम मातः ॥६४॥
महाप्रयाणं भुवनात्तवेदं, न विस्मरिष्यन्ति कदापि लोकाः।
प्रणम्यभक्त्यापि च निष्ठयापि, समर्चयिष्यन्ति पदाम्बुजं ते ॥६५॥

यावच्चन्द्रदिवाकरौ विलसतो यावच्च वायुस्तथा,
यावद्व्योम विराजते जननि हे यावद्धरा शोभते।
यावद्विश्वमिदं विभाति सकलं यावज्जलं निर्मलम्,
तावत्कीर्तिरतीव भव्यविमला ते राजतां भ्राजताम् ॥६६॥

हे माँ ! संसार से तुम्हारे इस महाप्रयाण को संसार कभी भी नहीं भूलेगा और भक्ति एवं श्रद्धा से प्रणाम करता हुआ तुम्हारे कमलरूपी चरणों की हनेशा पूजा करेगा।६५।

हे जननि ! इन्दिरे ! जब तक सूर्य और चाँद शोभायमान हैं, जब तक वायु, आकाश, पृथ्वी, जल एवं विश्व विद्यमान हैं, तब तक तुम्हारी अत्यन्त उज्ज्वल एवं स्वच्छ कीर्ति संसार में देदीप्यमान होती रहे।६६।

हे माँ ! भारतभूमि की अखण्डता के लिए तुम्हारा यह बलिदान चाँदी के पट्ट पर सोने के अक्षरों में निश्चय रूप से लिखा जायेगा।६४।

64. Your martyrdom for the preservation of the national integrity and solidarity of India shall be engraved in golden letters and set in silver frames.

65. The people will never forget your dignified departure from this world. They will adore your lotus like feet and bow down to them with great devotion.

66. O Mother Indira, may your renown of spotless purity shine gloriously as long as the moon and the sun blaze; as long as the wind blows; as long as the sky extends far and wide; as long as the earth revolves; as long as there is water in the oceans; as long as the universe exists.

श्रद्धाञ्जलिमिमं भक्त्या श्रद्धाभावसमन्वितः ।
तामेवार्पयेद्देवीमिन्दिरां लोकमातरम् ॥६७॥

श्रद्धाभाव से समन्वित होता हुआ यह कवि भक्तिपूर्वक इस श्रद्धाञ्जलि को लोकमाता उन इन्दिरा जी के ही चरणों में अर्पित करता है ।६७।

67. THIS VERBAL TRIBUTE IS LAID AT THE FEET OF DEVI INDIRA, THE UNIVERSAL MOTHER WITH DEVOTION AND FAITH.

इति कविरत्नश्रीकृष्णसेमवालविरचितं 'महाप्रयाणम्' समाप्तम् ।

देववाणी-परिषदा प्रकाशिता ग्रन्थाः

२.	सारस्वतसमुन्मेषः (डा० विन्ध्येश्वरीप्रसाद मिश्रः)	रु० २०.००
१.	भाति मौरीशसम् (डा० रमाकान्त शुक्लः)	रु० ६.००
३.	श्रीपादसप्ततिः (श्रीपादपराग-व्याख्या) (डा०स्वामिनाथन्)	रु० ४०.००
४.	श्रीकृष्णचरितम् (डा० रमेशचन्द्र शुक्लः)	रु० ३०.००
५.	कूहा (काव्यम्) (डा० उमाकान्त शुक्लः)	रु० २०.००
६.	सदाशयसमुच्चयः (पं० टी० वी० परमेश्वर अय्यरः)	रु० १५.००
७.	आभाणकमञ्जरी (,, ,,)	रु० १५.००
८.	मेघदूत : एक विश्लेषण (डा० देवीदत्त शर्मा)	रु० २०.००
९.	रघुवंश : एक विश्लेषण (,, ,,)	रु० २०.००
१०.	अभिज्ञानशाकुन्तल : एक विश्लेषण (,,)	रु० २०.००
११.	जय भारतभूमे ! (काव्यम्) (डा० रमाकान्त शुक्लः)	रु० ३०.००
१२.	अर्वाचीनसंस्कृतसाहित्यपरिचयः (प्रथम खण्ड) (,,)	रु० ३०.००
१३.	,, ,, ,, (द्वितीय खण्डः) (,,)	रु० ३०.००
१४.	राधाकृष्णरसायनम् (श्री ओट्टूर उण्णि नम्बूदिरीपादः)	रु० ४०.००
१५.	अभिनवहनुमन्नाटकम् (डा० रमेशचन्द्र शुक्ल.)	रु० २०.००
१६.	अभागभारतम् (काव्यम्) (श्रीसुन्दरराजः)	रु० २०.००
१७.	भाति मे भारतम् (काव्यम्) (डा० रमाकान्त शुक्लः)	रु० ४०.००
१८.	संस्कृत साहित्य में राष्ट्रिय भावना (डा० हरिनारायण दीक्षित)	रु० १५०.००
१९.	साधारणीकरण और समानान्तर चिन्तन (डा० सुलेखचन्द्र शर्मा)	रु० २००.००
२०.	अभिशापम् (नाटकम्) (डा० रमाकान्त शुक्लः)	रु० २०.००
२१.	रससिद्धान्त और नाटक (डा० सुन्दरलाल कथूरिया)	रु० ६०.००
२२.	साहित्यकौतुकम् (पं० टी० वी० परमेश्वर अय्यरः)	रु० ४०.००
२३.	पूर्णकुम्भः (ललितनिबन्धसंग्रहः) (पं० विष्णुकान्त शुक्लः)	रु० २०.००
२४.	स्फूर्तिसप्तशती (डा० शिवदत्तशर्मा चतुर्वेदी)	रु० ३०.००
२५.	रसदर्शनम् (डा० रमेशचन्द्र शुक्लः)	रु० ५०.००
२६.	श्रीबदरीशतरङ्गिणी (काव्यम्) (श्रीसुन्दरराजः)	रु० २०.००
२७.	सुरश्मिकाश्मीरम् (,,) (,,)	रु० २०.००
२८.	पुरश्चरणकमलम् (नाटकम्) (डा० रमाकान्त शुक्लः)	रु० १०.००
२९.	श्रीबदरीशसुप्रभातम् (डा० सी० आर० स्वामिनाथन्)	रु० १०.००
३०.	महाप्रयाणम् (श्रीकृष्ण सेमवालः)	रु० २०.००
३१.	पण्डितराजीयम् (नाटकम्) डा० रमाकान्त शुक्लः)	रु० २०००

देववाणी-परिषद्, दिल्ली, ६ वाणी-विहारः, नयी दिल्ली-११००५९.
दूरभाष : ५५३४९९